

LOK SABHA

Friday, February 27, 1981/Phalgun 8,  
1902 (Saka)

*The Lok Sabha met at Eleven of the Clock*

[Mr. SPEAKER in the chair]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

**Non-Purchase of Quality  
Items by Super Bazar**

\*166. PROF. AJIT KUMAR MEHTA:  
Will the Minister of CIVIL SUPPLIES  
be pleased to state :

(a) whether Super Bazar is not keeping  
on its shelves the items manufactured  
by reputed concerns of India and as a  
result the common man is deprived of  
the quality items ; and

(b) if so, what steps Government  
propose to combat this tendency and  
set the purchasing policy right ?

THE MINISTER OF CIVIL SUPPLIES (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA) : (a) and (b). Super Bazar, Delhi is selling quality goods procured from a large number of manufacturers in the organised industrial sector, reputable concerns and distributors. The purchase policy is generally based on consumer preference, and subjected to periodical review by the management.

प्रो० अजित कुमार मेहता : अध्यक्ष जी, सुपर बाजार का उद्देश्य उत्पादक और उपभोक्ताओं के बीच से बिचौलिए को समाप्त करना था तथा साथ ही कीमतों को स्थिर रखना था परन्तु सुपर बाजार अपने इस उद्देश्य में बुरी तरह से असफल रहा है। अभी स्थिति यह है कि सुपर बाजार में वस्तुओं की कीमतें बाजार भाव से प्रभावित होती हैं न कि सुपर बाजार 3963 L. S.—1

की कीमतें बाजार भाव को प्रभावित करती हैं। ऐसी स्थिति में मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार सुपर बाजार को क्रियाशील बना कर, जिस से कि उपभोक्ताओं का विश्वास उस पर जम जाए और सुपर बाजार कीमतों को स्थित रख सके, उसे समाज सेवा का एक प्रबल साधन बना सकेगी ?

SHRI RAVINDRA VARMA : Just see, Sir, all the ladies have ganged up together.

MR. SPEAKER : I do not know what they are cooking up.

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी : वैसे आप की इनायत होती नहीं, हम ने सोचा शायद इस तरह से आप की नजरें इनायत हो जाएं।

PROF. MADHU DANDAVATE :  
Let the Prime Minister also join them.

श्री विद्या चरण शुकल : अध्यक्ष जी, सुपर बाजार का जो उद्देश्य था वह यह था कि दिल्ली में कोई दुकानदार मुनाफाखोरी न कर सके। मुख्य रूप से मुनाफाखोरी रोकने और स्वस्थ प्रवृत्तियों को चलाने के लिए ही सुपर बाजार का निर्माण किया गया था। मैं कह सकता हूँ कि यद्यपि इधर उधर कुछ खामियां हो सकती हैं लेकिन जो इस का मुख्य उद्देश्य था उस को सुपर बाजार की ब्रांचेज हासिल करने में कामयाब हुई हैं। इस के कार्य में कई ऐसी कमजोरियां और कठिनाइयां बीच बीच में आईं जिनको समय समय पर दूर किया जाता रहा है। अब सुपर बाजार के बारे में यदि कोई यह सोचे कि उस से मूल्य नियंत्रित हो जायेंगे, मूल्य वृद्धि पर रोक लग सकेगी तो सुपर बाजार की संस्था के

द्वारा यह नहीं हो सकेगा, इस के लिए हमें कोई दूसरे उपाय सोचने पड़ेंगे। प्रमुख रूप से कंज्यूमर आइटम्स में मुनाफाखोरी पर रक-टोक लगाने का जो उद्देश्य था, उस में सुपर बाजार काफी हद तक सफल रहा है।

**अध्यक्ष महोदय :** मैं महिला सदस्यों से विनती करना चाहता हूँ कि वे इन बेंचेज तक ही सीमित रहें कहीं अलहदा चैम्बर तक न बढ़ जायें।

**DR. SUBRAMANIAM SWAMY :**  
All women getting together is a dangerous sign.

**THE MINISTER OF COMMERCE AND STEEL AND MINES (SHRI PRANAB MUKHERJEE) :** Is it dangerous to you ?

**प्रो० अजित कुमार मेहता :** अध्यक्ष जी, प्रश्न के जवाब में दिल्ली के सुपर बाजार के बारे में बताया गया है जब कि मैं ने सुपर बाजार इन जनरल पूछा था। खैर, यहां पर सुपर बाजार में सालाना टर्न-ओवर करीब करीब 12-13 करोड़ का होता है, सुपर बाजार द्वारा 10 परसेन्ट मुनाफा लिया जाता है, इस प्रकार से साढ़े 12 करोड़ के टर्न-ओवर पर सुपर बाजार को सालाना 1,25 लाख की आमदनी होती है और इस पर 1,22 लाख का खर्चा होता है। इस तरह से किराया वगैरह सारा मिला कर और सारा खर्चा घटा कर जो बचता है वह करीब 23 लाख है। जो वास्तविक आमदनी है, वह बहुत कम है। लगता ऐसा है कि उस में चोरी बहुत अधिक होती है और नाजायज काम होता है, जिस से वास्तविक लाभांश बहुत कम मिलता है।

**अध्यक्ष महोदय :** आप सवाल कीजिए।

**प्रो० अजित कुमार मेहता :** थोड़ी सी पृष्ठभूमि दे दूँ।

**अध्यक्ष महोदय :** आप सीधा सवाल कीजिए।

**प्रो० अजित कुमार मेहता :** यह जो जवाब दिया गया है उस में कहा है कि लगभग सभी मशहूर उत्पादकों की वस्तुएं सुपर बाजार में उपलब्ध होती हैं। मेरा अपना अनुभव यह है कि कुछ चीजें सुपर बाजार में नहीं मिल पाती हैं। और कम से कम दो साल से मैं एच० एम० टी० की घड़ी के लिए कोशिश कर रहा हूँ।

**अध्यक्ष महोदय :** इस से काम नहीं चलेगा, आप सवाल कीजिए।

**प्रो० अजित कुमार मेहता :** मैं सवाल ही कर रहा हूँ। एच० एम० टी० की 'काजल' घड़ी के लिए मैं दो साल से चक्कर लगा रहा हूँ और आज तक वह उपलब्ध नहीं हो सकी है हालांकि सुपर बाजार की ब्रांच आप के पार्लियामेंट हाउस एनेक्सी में है।... (व्यवधान)... मैं जानना चाहूंगा कि इस के बारे में आप क्या स्टेप ले रहे हैं। जिस से उपभोक्ताओं को वे चीजें, जिन की खोज में वे चक्कर लगाते रहते हैं, मिल सकें। एच० एम० टी० की घड़ी एक मशहूर चीज है।

**अध्यक्ष महोदय :** छोड़िए इस को।

**श्री विद्या चरण शुक्ल :** यह मैं नहीं कह सकता कि हर चीज, जो उपभोक्ता चाहता है, वह सुपर बाजार में उपलब्ध है लेकिन अधिकांश चीजें, जिन की मांग उपभोक्ता करते हैं उनका वितरण सुपर बाजार के द्वारा अवश्य किया जाता है। सुपर बाजार की व्यवस्था के बारे में जो माननीय सदस्य ने कहा, वह कुछ हद तक ठीक है कि वहां पर हिसाब-किताब जितनी अच्छी तरह से रखना चाहिए, मैं समझता हूँ उतने संतोषजनक ढंग से नहीं रखा गया है। उसका उपचार हम कर रहे हैं और पिछले वर्षों में जिस तरह से हिसाब-किताब रखा जाता था, उसको सुधारने के प्रयत्न कर रहे हैं। इस बात को देखते हुए जो भी कार्यवाही उचित है, वह कर रहे हैं। वितरण व्यवस्था ठीक हो और जो भी काम

वहाँ होता है, वह संतोषजनक ढंग से चले और किसी प्रकार का लीकेज, जैसा हम लोग समझते हैं कि थोड़ा बहुत होता है वह भी न हो और हमारा प्रयत्न यह है कि वह भी रुक जाए ।

SHRI K. RAMAMURTHY : Sir, have you allotted separate seats specially for ladies ?

MR. SPEAKER : They have commanded it for themselves.

श्रीमती बिद्यावती चतुर्वेदी : आगे इसलिए बैठे हैं ताकि मौका मिल जाए । रोटी दाल की परेशानी तो हमें उठानी पड़ती है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इस में प्रोफेसर साहब ने ही बहुत काफी समय ले लिया । नैक्स्ट क्वेश्चन, श्री चित्त बसु ।

#### Textile Policy

\*167. SHRI CHITTA BASU :  
SHRIMATI MADHURI SINGH:

Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) whether Government have finalised their textile policy ;

(b) if so, the salient features thereof ; and

(c) if not, the reasons for delay ?

THE MINISTER OF COMMERCE AND STEEL & MINES (SHRI PRANAB MUKHERJEE) (a) to (c). The Textile Policy is actively under consideration of the Government.

SHRI CHITTA BASU : Sir, I seek your protection. The hon. Minister can very conveniently take shelter under the umbrella answer that the matter is under active consideration.

MR. SPEAKER : Can you suggest any other umbrella ?

SHRI CHITTA BASU : Sir, I hope you would respond to it. The major strategy of the textile policy of our country should be the strategy of providing cheap cloth for the vast masses of our people, particularly belonging to the poorer sections of the society. The Cheap Cloth Control Scheme, which was brought into

being several years ago, as a matter of fact, failed to deliver the goods and meet the requirements of the poorer sections of the people. The target, which was fixed at 4 hundred million metres, was raised to 6 hundred million metres. But, to our greatest disappointment, the targets have not been fulfilled. Added to that, the private sector mills have been relieved of the responsibility of producing cheap cloth by the Janata regime, and that responsibility has now been fixed on the NTC, which has also not been able to fulfil the target. In this context, may I know from the hon. Minister whether he would see while formulating the policy that the target of cheap cloth is further raised and fulfilled so that cheap cloth can be provided to the poor people of our country, and also whether the Government can assure us that there will be no further rise of price of the controlled cloth.

SHRI PRANAB MUKHERJEE : Sir, my difficulty is, as I have told the hon. Member while replying, that we are just in the process of finalising the textile policy and when it is ready, I will come to the House and place the facts before the hon. Members.

The first part of the hon. Member's suggestion is that while formulating the policy we should pay more attention to producing cheaper varieties of cloth for the mass consumption and this is the policy which is being pursued. Sometimes we have not been able to fulfill the target, as he has mentioned and as is proved, but this is the exercise which we are making constantly.

Sir, in regard to the production of controlled cloth, it would not be possible to quantify it because all these things will come within the policy which I will announce, but we will try to see that definitely it can keep some pace with the demand in this area in regard to any blanket assurance regarding the price, it is not possible for me to give it now.

SHRI CHITTA BASU : May I also draw his attention to the fact that the present pattern of production is also directed towards earning more and more profit because there are too many varieties of cloth produced by the mills. In view of this, would the Government also consider the proposal of reducing the varieties and insist on or concentrate on production of such varieties of cloth which can be made use of by the poorer sections of the people ?

SHRI PRANAB MUKHERJEE : Sir, this is a very good suggestion, but there is a practical difficulty particularly faced by the Ministry of Finance in regard to the large number of varieties.